अध्याय 1. बातचीत

लेखक परिचय

लेखक - बालकृष्ण भट्ट
जन्म - 23 जून, 1844
निधन - 20 जुलाई 1914
निवास -स्थान इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
पिता बेनी प्रसाद भट्ट (एक व्यापारी थे)।
माता - पार्वती देवी (सुसंस्कृत महिला)
माता बालकृष्ण भट्ट के मन में अध्ययन की रुचि एवं लालसा जगाई।
शिक्षा-
(i) प्रारंभ में संस्कृत का अध्ययन।
(ii) 1867 में प्रयाग के मिशन स्कूल से एंट्रेंस की परीक्षा दी।

वृति (पेशा) -
(i) 1869 से 1875 तक प्रयाग के मिशन में अध्यापन।
(ii) 1885 में प्रयाग के CAV स्कूल में संस्कृत का अध्यापन ।
(iii) 1888 में कायस्थ पाठशाला इंटर कॉलेज में अध्यापक नियुक्त।

स्वभाव- उग्र (गुसैल) इसी कारण नौकरी छोड़नी पड़ी।
रचनात्मक सक्रियता - भारतेंदु हरिश्चन्द्र की प्रेरणा से 'हिन्दी वार्द्धिनी सभा' प्रयाग की ओर से 1877 में 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्र निकाला।
मासिक पत्र - हिन्दी प्रदीप (इसे 33 वर्षों तक चलाते रहे।)

रचनाएं -
(i)उपन्यास - नूतन ब्रहमचारी ,सौ अजान एक सुजान, सदभाव का अभाव गुप्त वैरी, रहस्य कथा, रसातल यात्रा, हमारी घड़ी, उचित दक्षिणा ।

(ii) नाटक- पद्मावती, बालविवाह, रेल का विकट खेल, एक रोगी और एक वैद्य, वेणी संहार, शिशुपाल वध, दमयंती स्वयंकर, शिक्षादान, सीता वनवास, मेघनाद वध, पतित पंचम किशतार्जुनिय।

(iii) प्रहसन- जैसा काम वैसा परिणाम, नई रोशनी का विष, आचार विडंबन ।

महत्वपूर्ण जानकारी
(1) बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के कवि हैं।
(2) बालकृष्ण भट्ट ने 1881 में वेदों की युक्तिपूर्ण समीक्षा की।
(3) बालकृष्ण भट्ट ने 1886 में लाला श्रीनिवास स दास दास के के 'संयोगिता 'स्वंयवर' की कठोर आलोचना कियें।
(4) बालकृष्ण भट्ट महान पत्रकार, निबंधकार तथा गद्यकार थे।
(5) बालकृष्ण भट्ट 1000 के आस-पास निबंध लिखे हैं।
(6) आचार्य शमचन्द्र शुक्ल ने निबंधकार के रूप में बालकृष्ण भट्ट को हिंदी साहित्य का एडीसन और स्टील कहा है।
(7) बालकृष्ण भट्ट 'बातचीत निबंध' के माध्यम से बातचीत करने की शैली सिखाते हैं।
(8) स्पीच का उद्देश्य सुननेवालों के मन में जोश और उत्साह पैदा करना होता है। घरेलू बातचीत मन रमाने के लिए होता
(9) राबिंसन क्रूसो 16 वर्षों तक जानवरो के साथ रहा था। उसने 16 वर्षों तक मनुष्य की बोली नहीं सुना था। 16 वर्ष के बाद पहली बार फ्राइडे के मुख से एक बात सुनी।
(10) बेन जॉनसन के अनुसार बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है।
(11) एडीसन के अनुसार असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है। अर्थात जब दो आदमी होते हैं तभी अपना दिल एक-दूसरे के सामने खोलते हैं।
(12) छह कानों में पड़ी बात खुल जाती है।
(13) जब तीन लोग एक साथ बात करता है तब 'त्रिकोण' बन जाता है।
(14) तीन लोगों के बीच के बातचीत को 'अंगूठी का नग' कहा जाता है।
(15) चार लोगों के बीच की बातचीत को 'फोर्मेलिटी' कहा गया है।
(16) चार से अधिक लोगो की बातचीत को 'राम-रामोवल कहा गया है।
(17) दो बूढ़े लोगों के बातचीत में 'जमाने की शिकायत' होती है।
(18) दो हम सहेलियों की बातचीत में 'रस का समुद्र उमड़ जाता है।
(19) दो बुढ़ियों की बातचीत का मुख्य प्रकरण 'बहु-बेटी' होती है।
(20) बातचीत करने का अनेक प्रकार है परंतु, सबसे उत्तम प्रकार है स्वयं से बाते करना।
(21) यूरोप (योरोप) के लोगों में बात करने का हुनर है आर्ट ऑफ कनवरसेशन। जिसे सुहृद गोष्ठी भी कहा जाता है।
(22) पच्चीस से अधिक उर्म वाले लोगों के बातचीत में सारगर्भित होती है।
(23) पच्चीस से कम उर्म वाले लोगों के बातचीत में दिलबहलाव और ताजगी रहती है। जिसका मिठास उससे दस गुणा ज्यादा होता है।

सारांश
बातचीत शीर्षक निबंध के निबंधकार बालकृष्ण भट्ट हैं। जो भारतेन्दु युग के एक महान कवि हैं। इस पाठ में बातचीत करने की उत्तम शैली को बताया गया है। कवि कहते हैं ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में अनेक प्रकार की शक्तियाँ दिये हैं. उनमें से एक वाक्-शक्ति भी है। यदि मुझमें वाक्-शक्ति होती तो पूरा सृष्टि गूँगा प्रतीत होता। सब लोग लुंज-पुंज हो जाते। अवाक् होने के कारण हम सुख-दुख का कर पाते, कह-सून भी नहीं पाते। और स्पीच का का उद्देश्य सुननेवालों के मन में जोश और उत्साह पैदा करना है। पर घरेलू बातचीत तो मन रमाने का ढंग है। जहाँ आदमी की अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने फिरने आदि की जरूरत है, वहीं बातचीत की भी अत्यंत आवश्यकता है। जो कुछ मवाद् या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए ही भाप बनकर बाहर निकलता है। सच है- जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता। बेन जॉनसन का यह कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। एडीसन का कहना है "असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है। तीन लोगों के बातचीत को "अँगूठी का नग" कहा गया है। चार लोगों के

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

बातचीत को "फॉर्मेलिटि" कहा गया है। चार से अधिक लोगों के बातचीत को "राम-रमौवल" कहा गया है। यूरोप के लोगो में बातचीत करने की एक विशेष कला होती है, जिसे "आर्ट ऑफ कन्वरसेशन" कहा जाता है। बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है खुद से बाते करना। हमारी भीतरी मनोवृति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह इस संसार का एक भारी आईना है, जिसमें जब चाहो जैसी चाहो सूरत देख लो। जो व्यक्ति अपनी जुबान पर नियंत्रण रखकर अपने मन से बातचीत करना सीख लेता है, वह बहुत बड़ी शक्ति पा लेता है। बातचीत शीर्षक निबंध के निबंधकार बालकृष्ण भट्ट है। जो भारतेन्दु युग के एक महान कवि हैं। इस पाठ में बातचीत करने की उत्तम शैली को बहुत ही अच्छे ढंग से बताया गया है। कवि कहते हैं ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में अनेक प्रकार की शक्तियाँ दिये हैं, उनमें से एक वाक्-शक्ति भी है। यदि मुझमें वाक्-शक्ति न होती तो पूरा सृष्टि गूँगा प्रतीत होता। सब लोग लुंज-पुंज हो जाते। अवाक् होने के कारण हम सुख-दुख का अनुभव नहीं कर पाते, कह-सून भी नहीं पाते। और स्पीच का उद्देश्य सुननेवालों के मन में जोश और उत्साह पैदा करना है। पर घरेलू बातचीत तो मन रमाने का ढंग है। जहाँ आदमी की अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने फिरने आदि की जरूरत है, वहीं बातचीत की भी अत्यंत आवश्यकता है। जो कुछ मवाद् या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए ही भाप बनकर बाहर निकलता है। सच है-जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता। बेन जॉनसन का यह कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। एडीसन का कहना है "असल बातचीत" सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है। तीन लोगों के बातचीत को "अँगूठी का नग" कहा गया है। चार लोगों के बातचीत को "फॉर्मेलिटि" कहा गया है। चार से अधिक लोगों के बातचीत को "राम-रमौवल" कहा गया है। यूरोप के लोगो में बातचीत करने की एक विशेष कला होती है, जिसे "आर्ट ऑफ कन्वरसेशन" कहा जाता है। बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है खुद से बाते करना। हमारी भीतरी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह इस संसार का एक भारी आईना है, जिसमें जब चाहो जैसी चाहो सूरत देख लो। जो व्यक्ति अपनी जुबान पर नियंत्रण रखकर अपने मन से बातचीत करना सीख लेता है, वह बहुत बड़ी शक्ति पा लेता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. अगर हममें वाक्शक्ति न होती, तो क्या होता? 'बातचीत' शीर्षक निबंध के आधार पर उत्तर दें। 2022

उत्तर- बातचीत शीर्षक निबंध के निबंधकार बालकृष्ण भट्ट जी हैं। इस निबंध के माध्यम से निबंधकार बातचीत करने की उत्तम शैली को बताते हैं। ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में अनेक प्रकार की शक्तियाँ दिये हैं, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण वाक्-शक्ति है। अर्थात बोलने की शक्ति। अगर हममे वाक्-शक्ति न होती तो सारी सृष्टि गूँगी प्रतीत होती। सब लोग लुंज-पुंज हो जाते और किसी कोने में बैठा दिए होते और जो कुछ सुख-दुख का अनुभव हम अपनी दूसरी इंद्रियों के द्वारा करते हैं अवाक् होने के कारण नहीं कर सकते और कह-सून नहीं पाते।

2. 'बातचीत' शीर्षक निबंध का सारांश लिखिए। 2023

उत्तर- बातचीत शीर्षक निबंध के निबंधकार बालकृष्ण भट्ट जी हैं। बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के कवि हैं। इस पाठ में बातचीत करने की उत्तम शैली को बताया गया है। कवि कहते हैं ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में अनेक प्रकार की शक्तियाँ दिये हैं. उनमे से एक वाक्-शक्ति भी है। यदि हममे वाक्-शक्ति न होती तो सारा सृष्टि गूँगा प्रतीत होता। सब लोग लुंज-पुंज हो जाते। अवाक् होने के कारण सुख-दुख का अनुभव भी नहीं कर पाते, कह-सून नहीं पाते और स्पीच का उद्देश्य सुननेवालों के मन में जोश और उत्सवात पैदा कर देना है। जबकि घरेलू बातचीत मन रमाने का ढंग है। जहाँ आदमी की अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने, पीने, चलने फिरने आदि की जरूरत है, वहाँ बातचीत की भी अत्यंत आवश्यकता है। जो कुछ मवाद् या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल जाता है। सच है जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता। बेन जानसन का यह कहना है कि बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है। एडीसन का कहना है असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है। तीन लोगों के बातचीत को अँगूठी का नग कहा गया है। चार लोगों की बातचीत को फॉर्मेलिटि कहा गया है। चार से अधिक लोगों के बातचीत को राम-रमौवल कहा गया है। यूरोप के लोगो में बातचीत करने की एक कला होती है जिसे आर्ट ऑफ कन्वरसेशन कहा जाता है। बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है खुद से बाते करना। यह साधनों का मूल है, शक्ति परम पूज्य मंदिर है।

3. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है? इसके द्वारा वह कैसे अपने लिए सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है?

उत्तर- ईश्वर ने मनुष्य को सबसे बड़ी शक्ति वाक्-शक्ति दी है। जिससे विचारों का आदान-प्रदान आसानी से होता है। भट्ट जी के अनुसार बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका हे स्वयं से बाते करने की शक्ति को बढ़ाना। हमारी भीतरी मनोवृति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है वह संसार का एक बड़ा आइना है। मनुष्य को सर्वथा नवीन संसार की रचना के लिए जिहवा जो कतरनी के समान स्वच्छंद चलती है इसपर काबू करना चाहिए। जिससे बड़े-से-बड़े शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्नः -

1. सच है, जबतक मनुष्य बोलता नहीं, तब तक उसका गुण दोष प्रकट नहीं होता। 2011

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित बातचीत शीर्षक निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि अपने अन्दर की भाव दूसरे के सामने प्रकट करने के लिए और उसका आशय ग्रहण करने के लिए शब्दो की आवश्यकता होती है यह सत्य है कि जबतक मनुष्य बोलता नहीं है तबतक उसका गुण-दोष प्रकट नहीं होता है। बल्कि ढ़का ही रह जाता है।

2. "जो कुछ मवाद या धुआँ जमा रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल पड़ता है।" 2024

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित बातचीत शीर्षक
निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के भाव उठते रहते हैं। कभी हर्ष, कभी विषाद, कभी करुणा तो कभी दया के। जो बातचीत के जरिए अपने मन को हल्का करते है। अतः जो कुछ मवाद या धुआँ जमा

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

रहता है, वह बातचीत के जरिए भाप बनकर बाहर निकल जाता है।

3. जहाँ आदमी को अपनी जिंदगी मजेदार बनाने के लिए खाने - पीने, चलने फिरने आदि की जरूरत है, वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यंत आवश्यकता है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित बातचीत शीर्षक
निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि वाक् शक्ति के बिना तो पूरा श्रृष्टि हीं गूंगा है। यदि हम बातचीत नहीं करेंगे तो एक-दूसरे का दूख-सुख का अनुभव नहीं कर पायेंगे। कह सून नहीं पायेंगे। अतः आदमी को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खाने-पीने, चलने-फिरने आदि की जरूरत है वहाँ बातचीत की भी उसको अत्यंत आवश्यकता है।

4. हमारी भीतरी मनोवृति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा भारी आइना है, जिसमें जैसी चाहो वैसी सूरत देख लेना कोई दुर्घट बात नहीं है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ बालकृष्ण भट्टा द्वारा रचित बातचीत शीर्षक निबंध पाठ से लिया गया है। लेखक का कहना है कि ईश्वर ने मनुष्य को वरदान के रूप में वाक्-शक्ति दिये है। पर बातचीत करने का सबसे उत्तम तरीका है स्वयं से बाते करना। जब मनुष्य भीतरी मनोवृति का प्रयोग करेंगे तो यह प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है यह संसार का सबस बड़ा आइना है जिसमें जब चाहो वैसी सूरत देख लो। मनुष्य को बस अपनी जिह्वा पर काबू रखना चाहिए। जिससे बड़े से बड़े शत्रु पराजित हो जाते है।

लघु उत्तरीय प्रश्नः -

1. 'ऑर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है?

उत्तर- योरोप के लोगों में बात करने की कला को आर्ट कनवरसेशन कहते है। यहाँ के लोग ऐसे चतुराई के प्रसंग छेड़ देते है। जिसे सुनकर कानों को अत्यंत सुख मिलता है। इसकी पूर्ण शोभा कव्यकला प्रवीण विद्धन्मंडली में है।

2. बातचीत के संबंध में बेन जॉनसन और एडीसन के क्या विचार है ?

उत्तर- बातचीत के संबंध में बेन जॉनसन कहते हैं कि बोलने से के हीं मनुष्य के रूप का साक्षात्कर होता है एवं एडीसन कहते हैं कि मैं असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है।

3. अगर हममें वाक्-शक्ति न होती तो क्या होता? 2011,2019

उत्तर- अगर हममें वाक्-शक्ति न होती तो ये सारा संसार गूंगा प्रतीत होता सब लोग लुंज-पुंज से हो जाते किसी कोने में बैठा दिए होते। और अवाक् होने के कारण कुछ कह-सुन नहीं पाते तथा दुख-सुख का अनुभव नही कर पाते।

4. बातचीत शीर्षक पाठ में दो बुढ़ियों की बातचीत का प्रकरण क्या है? 2022

उत्तर- लेखक बालकृष्ण भट्ट के अनुसार दो बुढ़ियों की की बातचीत का मुख्य प्रकरण बहु-बेटी होती है। जिसमे बहुओं या बेटों का गिला शिकवा होता है या विरादर वालो से ऐसा बात खोद देती है जिससे लड़ाई झगड़े हो।

5. दो हमजोली सहेलियों की बातचीत में क्या स्थिति होती है? 2019

उत्तर- दो हमजोली सहेलियों की बातचीत का जायका बहुत निराली होती है। इसमें रस का समुद्र उमड़ा चला आता रहता है। इसका पूरा स्वाद उसी से पूछना चाहिए।

6. जबतक मनुष्य बोलता नहीं तबतक उसके व्यक्तित्व का कौन-सा पक्ष प्रकट नहीं होता है? 2024

उत्तर- बालकृष्ण भट्ट रचित बातचीत शीर्षक निबंध के अनुसार जबतक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुण दोष प्रकट नहीं होता है। अपने अन्दर की भाव को दूसरे के सामने प्रकट करने के लिए बोलना ही पड़ेगा। नहीं तो गुण-दोष का पता है।

वस्तुनिष्ट प्रश्नः -

1. बालकृष्ण भट्ट किस काल के रचनाकार हैं? (BSEB, 2018, 23)
(A) भारतेन्दु युग (B) भक्तिकाल
(C) रीतिकाल (D) द्विवेदी युग

2. इनमें से कौन-सा उपन्यास भट्ट जी द्वारा रचित है ?
(A) गंगालहरी (B) देवदास
(C) नूतन ब्रह्मचारी (D) तोता मैना

3. 'बातचीत निवन्ध के निबन्धकार कौन हैं? (BSEB, 2019)
(A) मोहन राकेश। (B) जयप्रकाश नारायण
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) भगत सिंह

4. बातचीत के जरिये भाप बनकर क्या बाहर निकल जाता है? (BSEB, 2023)
(A) ईर्ष्या (B) द्वेष **(C)** मवाद और धुआ (D) क्लेश

5. बालकृष्ण भट्ट का उपन्यास है-
(A) किरातार्जुनीय **(B)** नूतन ब्रह्मचारी
(C) नई रोशनी का विष (D) सीता वनवास

6. रॉबिसन क्रूसो कितने वर्षों तक मानव मुख नहीं देख सका था ? (BSEB, 2024)
(A) 22 वर्ष (B) 27 वर्ष **(C) 16** वर्ष (D) 10 वर्ष

7. 'सौ अनाज एक सुजान' नामक उपन्यास के उपन्यासकार कौन हैं ?
(A) जयप्रकाश नारायण (B) जगदीशचन्द्र माथुर
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) मोहन राकेश

8. बालकृष्ण भट्ट ने एन्ट्रेंस परीक्षा कब उत्तीर्ण की थी ?
(A) 1867 ई. (B) 1872 ई. (C) 1870 ई. (D) 1854 ई.

9. असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है। यह किसका मत है-
(A) भट्ट जी का **(B)** एडीसन का
(C) तुकाराम का (D) नेहरू जी का
10. बालकृष्ण भट्ट का जन्म कहाँ हुआ था?
(A) वाराणसी में (B) कानपुर में

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.

(C) इलाहाबाद में (D) मेरठ में

11. भट्ट जी ने हिन्दी प्रदीप का संचालन कितने वर्ष किया था?
(A) 28 वर्ष (B) 36 वर्ष। **(C)** 33 वर्ष। (D) 27 वर्ष

12. बालकृष्ण भट्ट किस युग के रचनाकार हैं ? **(BSEB, 2021)**
(A) भारतेन्दु युग (B) प्रेमचन्द युग
(C) द्विवेदी युग (D) इनमें से कोई नहीं

13. 'हिन्दी प्रदीप' 'नामक मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया था-(A) प्रतापनारायण मिश्र ने (B) राधाचरण गोस्वामी ने **(C)** बालकृष्ण भट्ट ने
(D) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने

14. 'बातचीत' की साहित्य विधा है-
(A) निबन्ध (B) नाटक
(C) उपन्यास (D) कहानी

15. बालकृष्ण भट्ट की माता का क्या नाम है ?
(A) सुशीला देवी (B) रजनी देवी
(C) पार्वती देवी (D) सविता देवी

16. बालकृष्ण भट्ट ने किस पत्रिका का सम्पादन किया?
(A) धर्मयुग (B) समालोचक
(C) काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका **(D)** हिन्दी प्रदीप

17. 'बातचीत' निबन्ध के माध्यम से लेखक बालकृष्ण भट्ट क्या बताना चाहते हैं?
(A) संवाद की शैली **(B)** बातचीत की शैली
(C) भाषण की शैली (D) इनमें से कोई नहीं

18. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या है?
(A) विद्वतापूर्ण बात करना (B) तर्कपूर्ण बात करना
(C) भीड़ से बात करना **(D)** अवाक् होकर अपने से बातचीत करना

19. 'दमयंती स्वयंवर' किस लेखक की रचना है? **(BSEB, 2020)**
(A) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (B) मलयज
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) भगत सिंह

20. बालकृष्ण भट्ट का जन्म हुआ था-
(A) 23 जून, 1884 को (B) 23 जून, 1844 को
(C) 20 जुलाई, 1902 को (D) 18 दिसम्बर, 1834 को

21. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्धकार के रूप में किसे अंग्रेजी साहित्य के एडीसन और स्टील की श्रेणी में रखा
(A) जगदीशचन्द्र माथुर (B) प्रेमचन्द
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) प्रतापनारायण मिश्र

22. कौन-सी रचना बालकृष्ण भट्ट की नहीं है
(A) नूतन ब्रह्मचारी (B) सौ अजान एक सुजान
(C) सद्भाव का अभाव **(D)** परीक्षा गुरु

23. कौन -सी रचना बालकृष्ण भट्ट की है
(A)रेल का विकट खेल (B) कछुआ धरम
(C) रेणुका (D) प्राच्यविद्या

24. बालकृष्ण भट्ट की रचना है-
(A) जूठन (B) रोज **(C)** बातचीत। (D) तिरिछ

25. बालकृष्ण भट्ट के पिता का क्या नाम थार **2020)**
(A) देनी प्रसाद भट्ट **(B)** बेनी प्रसाद भट्ट
(C) टेनी प्रसाद (D) सैनी प्रसाद

26. 'बातचीत' शीर्षक निबन्ध के अनुसार-रस का समुद्र किनकी बातचीत में उमड़ा चला आता है? **(BSEB, 2022)**
(A) दो हम सहेलियों की बातचीत में (B) पुरुषों की बातचीत में
(C) दो बच्चों की बातचीत में (D) दो मूर्खों की बातचीत में

27. 'संवाद' में सबसे महत्वपूर्ण क्या है?
(A) तर्क (B) जिज्ञासा
(C) आत्मीयता (D) प्रवाहपूर्ण भाषा

28. निबंध लेखन की दृष्टि से भारतेन्दु युग कैसा था?
(A) उर्वर (B) अनुपयोगी (C) प्रगतिशील (D) प्रतिगामी

ATM Classes Since-2017

@All right reserved. No part of this work may be reproduce in any form, without permission in writing from the copyright holder.